मुझे सईद बिन ज़ैद (रदी) की बददुआ लग गई

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

हदीस के इस्लाही मझामीन उर्दू [अल्लाह के नेक बंदो की करामत] से एक हिस्से का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हजरत उरवा हजरत जूबैर के साहब्ज़ादे हैं ये सहाबी नही है उनके बडे भाई अब्दुल्लाह बिन जूबैर (रदी) हैं, हजरत आयशा (रदी) के भान्जे है उनही से रिवायत है के हजरत सईद बिन ज़ैद बिन उमर बिन नुफैल (रदी) जो दस जन्नत की खुशखबरी वालों मे से हैं और हजरत उमर (रदी) के वो चचाज़ाद भाई हैं जीन्के निकाह मे हजरत उमर की बहन फातिमा थी और हजरत उमर (रदी) के इस्लाम लाने का मशहूर वाक्या है के रसूलुल्लाहﷺ के कत्ल के इरादा से चले थे रास्ते मे किसीने पूछा कहां जा रहे हो उन्होने अपने इरादा का इज़हार किया तो उसने कहा पेहले अपने घर की तो खबर लो तुम्हारे बहनोई इस्लाम ला चूके है वो बहनोई हजरत सईद

बिन ज़ैद (रदी) यही थे.

हजरत उमर (रदी) वापस हुवे उनके घर गये तो दरवाज़ा अंदर से बंद था और कुरान की तालीम हो रही थी हजरत खुबैब या हजरत खब्बाब उनको कुरान सिखा रहै थे हजरत उमर (रदी) ने दरवाज़ा खिटखिटाया तो वो छुप गये किस्सा मालूम और मशहूर है.

उनके खिलाफ उरवा बिन्ते औस ने मरवान बिन हकम के यहां दावा दायर किया जो हजरत मुआविया (रदी) के ज़माने खिलाफत मे मदीना मुनव्वरह के गर्वनर थे के उन्होने मेरी ज़मीन पर नाजाइज़ कब्ज़ा कर लिया है मरवान ने हजरत सईद बिन ज़ैद (रदी) से पूछा के ये औरत आप के मुताल्लिक कया कह रही है, हजरत सईद बिन ज़ैद (रदी) ने जवाब मे फरमाया इस सिलसिले मे रसूलुल्लाहﷺ का इरशाद बराहे रास्त सुनने के बाद भी भला मैं इस की ज़मीन ले सकता हूं, मरवान बिन हकम ने पूछा आपने रसूलुल्लाहﷺ से ऐसा कौन सा इरशाद सुना है.

हजरत सईद बिन ज़ैद (रदी) ने फरमाया मैने रसूलुल्लाहﷺ को

इरशाद फरमाते हूवे सुना है के जो आदमी किसी की एक बालिश्त ज़मीन नाजाइज़ तरीका से लेगा तो अल्लाह कल कियामत के रोज़ सात ज़मीनों तक की एक बालिश्त ज़मीन उस के गले मे तौक बनाकर डालेन्गे ये सुनकर मरवान बिन हकम ने कहा आप के इस बयान के बाद मैं आप से कोइ गवाह नही मांगता गोया उसने इस मुकद्दमा को खारिज कर दिया.

उसके बाद हजरत सईद बिन ज़ैद (रदी) ने फरमाया ए अल्लाह ए औरत जीसने मैरे खिलाफ दावा दायर किया है अगर जूठी है तो उसकी आंखो को अंधा कर दे और उसको उसी ज़मीन मे मौत दे वही ज़मीन उसके लिये मौत का सबब बन जाये.

रावी उरवा बिन जूबैर कहते हैं आखिर मौत आने से पेहले वो अंधी हो गई और उसी ज़मीन मे चल रही थी के एक गड्डे मे गिरी और उसकी मौत हो गई (मुस्लीम शरीफ).

दूसरी रिवायत मे ये है के मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अब्दुल्लाह कहते है मैने उस औरत को अपनी आंखो से देखा के वो अंधी हो चूकी थी और दिवारों का सहारा लेकर टटोल टटोल कर

चलती थी और लौगों से कहा करती थी मुझे सईद बिन ज़ैद की बददुआ लग गई जीस ज़मीन के मुताल्लिक उसने हजरत सईद बिन ज़ैद के खिलाफ दाअवा दायर किया था उसमे एक घडा था एक मरतबा वहां से गुज़र रही थी के उसमे गिरी और वही ज़मीन उसकी कबर बन गई.

इफादात – यहां पर भी हज़राते सहाबा की उसी इन्साफ पसंदी का नमूना देखने को मिलता है के पेहले ही से जानते थे के वो औरत जूठी है उन्होने नाजाइज़ तरीका से उसकी ज़मीन नही ली थी फिर भी एहतियात के तौर पर कह रहे हैं के अगर अपने दावे मे जूठी है तबही उसके साथ ऐसा करना.

तौक बनाकर गले मे डालने का मतलब कया है बाज़ हज़रात कहते हैं के इसका मतलब ये है के इस को अंदर धसां दिया जायेगा और चारों तरफ ज़मीन होगी ये एक तरह का तौक ही हो गया और बाज़ कहते हैं के एक बालिश्त ज़मीन की सातों तेह तक जीतनी मिट्टी होगी इस को तौक बनाकर उसके गलेमे डाला जायेगा और उसको उठाने पर मजबूर किया जायेगा.